धारण करे तो धर्म
(धर्म के वास्तविक स्वरूप पर प्रकाश)

आचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयनका

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी
धारण करें तो धर्म
विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय ................................................................. ७

१. भगवान बुद्ध और उनकी शिक्षा ........................................... ९
   निर्मल धर्म ........................................................... १७
   धर्म को समझो ................................................. २२
   धर्म सनातन ......................................................... २६

२. बुद्ध और धर्म .......................................................... ३१
   वास्तविक ब्रह्मावन .............................................. ३१
   धर्मावरण ही ब्रह्मावरण .................................... ३३
   धर्म धारण करें ................................................... ३५
   अमित असीम धर्म .............................................. ३८
   सही अहिंसक ..................................................... ४१
   शुद्ध धर्म का आकलन ........................................... ४४
   बुद्ध किसे कहते हैं ........................................... ४७
   धारण करें सो धर्म ............................................. ५४

३. आंखों देखा विवरण .................................................. ६१
   ब्रह्मावु धन्य हुआ .............................................. ६५

४. असीम कहरणानिधान – [१] .......................................... ७४
   रक्त-रंजित यज्ञ ................................................. ७५
   असीम कहरणानिधान – [२] ..................................... ७९

५. बड़े पारमि क्षण की ................................................ ८५
   पुत्र-वियोग ...................................................... ८५
पल्ली-वियोग .................................................................८८
ाग्रज-वियोग ...............................................................८९
पितामह-वियोग ...........................................................८९
पिता-वियोग .................................................................९०
६. धर्म-समन्वय .................................................................९२
७. कौचड़ में कमल खिला ...................................................९८
नगरशोभिनी धर्मशोभिनी बनी ..................................१०२
८. पुरुषार्थ कौमारभृत्य ....................................................१०८
मीवक की प्रसिद्धि .......................................................११२
राजगृह का नगरस्थिति ...................................................११२
कार्षी का श्रेष्ठिपुत्र ....................................................११३
राजा प्रयोत .................................................................११४
भगवान बुढ़ को दुःखाल ..............................................११६
९. राजकुमारी बुढ़दी के प्रश्न ..........................................११८
१०. अभागा राजकुमार जयसेन .......................................१२३
भ्रूपत जयसेन .............................................................१२८
११. महाली लिख्विनी ........................................................१३४
धन्य हुई वैशाली .......................................................१३९
१२. अनार्धियांड .............................................................१४८
बुढ़ दर्शन .................................................................१४८
धर्म दर्शन .................................................................१५२
संघ दर्शन .................................................................१५८
दान-देतना .................................................................१६२
अनर्ध दान .................................................................१६६
१३. तथागत का पार्थिव शरीर ..........................................१७६
धारण करे तो धर्म है, वरना कोरी बात।
सूरज उगे प्रभात है, वरना काली रात।
प्रकाशकीय

कल्याणमित्र श्री सत्यनारायणजी गोयनका की कई धर्म-पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनके अनेक लेख, प्रश्नोत्तर तथा प्रवचनों के अंश समाचार पत्र-पत्रिकाओं आदि में प्रकाशित हुए हैं। श्री गोयनकाजी के प्रवचन कई टीवी-चैनलों पर प्रसारित होते रहते हैं। इन सबसे अनेकानेक लोग प्रश्नों पाकर, शुद्ध धर्म की ओर आकर्षित होते, तथा उनके द्वारा मनोनीत सहायक आचार्यों के मार्गदर्शन में विश्वस्यना-ध्यान के द्वारा दिव्यसिद्धिय शिविरों में सम्मिलित होकर सही मानने में धर्मलाभी हुए हैं। पुराने साधकों को इस विपुल साहित्य से धर्म की गहराईयों का समझने और जीवन में उतारने का मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

प्रमुख विपश्यना केन्द्र, धमंगी, इगतपुरी से ‘विपश्यना विशोधन विन्यास’ साधकों के लाभार्थ ‘विपश्यना’ नाम से हिंदी और अंग्रेजी में पत्रिकाएं भी प्रकाशित करता है। पूर्व गुरुजी के लेख, तस्वीर-विवरण धम्मवाणी और उनके स्वरुप दोनों ‘विपश्यना’ मासिक (हिंदी) के अविभाज्य अंग हैं।

इन पत्रिकाओं में पूर्व गुरुजी के अनेक लेख विश्वस्यना क्रमशः छपे। अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित विकसित क्रमशः छपे। प्रस्तुत पुस्तक "धारण केन्द्र तो धर्म" में पूर्व गोयनकाजी के ऐसे लेखों का समावेश किया गया है जिनमें २६०० वर्ष पुरातन भारत की ऐतिहासिक घटनाओं में धर्म के द्वारा सही ढंग से समझने और उन्हें धारण कर अपना लोकभाषा तथा पारम्परिक जीवन मुख्य बनाने का समाज चित्रण है। इससे समाज के हर वर्ग के लोग लाभान्वित हुए। ‘विपश्यना’ की वही कल्याणकारी विद्या भारत में लुप्त हो जाने के बाद भरोसे भी दूर दूर है। ऐसे अनेक लेखों की संग्रहीत कर महत्त्व का शुद्ध धर्म समाचार पत्रों में कुछ बार-बार प्रकाशित होती हैं।

ऐसे अनेक लेखों की संग्रहीत कर महत्त्व का शुद्ध धर्म समाचार पत्रों में कुछ बार-बार प्रकाशित होती हैं। प्रकाशित हुए हैं। प्रकाशित हुए हैं।
लेखमाला का हर मोती एक-दूसरे से जुड़े रह कर भी अपने आप में अलग विशिष्टता लिए हुए है। विश्वास है पाठक इस प्रयास से प्रभूत प्रेरणा प्राप्त कर यथासंभव विश्वना-शिविरों में सम्मिलित होकर धर्म के व्यावहारिक अभ्यास से न केवल अपना मंगल साधेंगे, बल्कि अन्य अनेकों के मंगल में भी सहायक बनेंगे। श्री गोयन्काजी के साहित्य-सृजन का यही एकमेव उद्देश्य है।

प्रकाशन समिति,
विश्वना विशेषज्ञ विन्यास
१. भगवान बुद्ध और उनकी शिक्षा

आओ, बुद्ध को समझें और उनकी शिक्षा को समझें।

भगवान बुद्ध की पौराणिक और अलंकारिक व्याख्या के ठुंढासे में अक्सर उनका सही व्यक्तित्व धूमिल हो जाता है और ऐसे ही धूमिल हो जाती है उनकी कल्याणकारी शिक्षा। हम ऐसा न होने दें, इसी में सब का कल्याण समाया हुआ है।

गौतम बुद्ध हमारे देश के एक ऐतिहासिक महापुरुष थे। उनके तथा उनकी शिक्षा के बारे में वास्तविकता की खोज करनी हो तो उनकी अपनी वाणी का सहारा लेना उचित है, न कि किसी अन्य के कथन का। और उन के कथन सही भी हो सकता है और अपनी मान्यताओं के रंगों चम्पे से देखा गया हो तो गलत और भ्रामक भी। भगवान बुद्ध की मूल वाणी अपने देश में लगभग ढेर-ढेर हजार वर्षों से विलुप्त हो गयी। परंतु सौभाग्य से पड़ोसी देशों में यहाँ से जैसी गयी, उसे वहाँ टीक वैसे ही अपने शुद्ध रूप में संभाल कर रखा गया। इसके लंबे अंतराल के बाद वह भारत में पुनः लौटी है हमें उसका लाभ लेना चाहिए। भारत के इस अनमोल ऐतिहासिक साहित्य का वैज्ञानिक अध्ययन करने पर भगवान बुद्ध और उनकी शिक्षा के बारे में अनेक तथ्य स्पष्टतः उजागर होते हैं।

१ - बोधिसत्व सिद्धरथ गौतम अनेक जन्मों के परिश्रम पुरुषार्थ द्वारा पारमिताओं का याने भवसागर से पर उतरने के लिए आवश्यक धर्मगुणों का परिपूर्ण संचय-संग्रह कर यह अंतिम जन्म में सम्पन्न रूप से संबुद्ध बने याने खयां बुद्ध बने। किसी की कृपा द्वारा ऐसा नहीं हुआ।

२ - गौतम बुद्ध भगवान कहलाए। आज के भारत की सामान्य भाषा में भगवान का अर्थ ईश्वर या परमात्मा हो गया है। परंतु २६ शताब्दी पूर्व के भारत की जन भाषा में इसका अर्थ कुछ और ही था। बुद्ध-वाणी स्पष्टतया कहते है कि “भग-रागो, भग-दोसो, भग-मोहोति भगवा।”

जिसने अपने राग भगन कर लिए, देश भगन कर लिए, मोह भगन कर लिए, वह भगवान है।

इस अवस्था को प्राप्त कर कोई भी व्यक्ति भगवान बन सकता है।